आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2424 • उदयपुर, शुक्रवार 13 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नारायण सेवा द्वारा सिरोही में 62 गरीब परिवारों को राशन दिया

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर एवम् दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की शाखा सिरोही द्वारा निःशुल्क राशन का वितरण किया गया।

पूरे भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क जा रहा है। सिरोही शाखा के अंतर्गत 62 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। सिरोही शाखा संयोजक अदाराम जी भाटिया ने बताया कि श्री कैलाश जी सुथार संरपच झाड़ोली ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह जी ने संस्थान गतिविधियों का अवलोकन किया। संस्थापक चैयरमेन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान 36 वर्षो से दीन–दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोनाकिट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। सिरोही आश्रम की पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

हैदराबाद में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर 2 अगस्त 2021 को नारायण सेवा संस्थान के हैदराबाद (तेलंगाना) आश्रम में संपन्न हुआ। इस शिविर में 27 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 10 के लिये कैलिपर्स की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री तरुण जी मेहता (अध्यक्ष गुजराती ब्राह्मण समाज), अध्यक्षता श्री रमेश कुमार बंग (चैयरमेन महेश बैंक), विशिष्ट अतिथि श्री उत्तम जी जैन डामरानी (समाजसेवी), श्रीमती अलका जी चौधरी (सेवा प्रेरक नारायण सेवा हैदराबाद) कृपा करके पधारे। टेक्नीशयन टीम में श्री नाथूसिंह जी एवं श्री भंवर सिंह जी शिविर टीम में महेन्द्र सिंह जी (शिविर प्रभारीम) व श्री शरद जी का पूर्ण योगदान रहा।

संस्थान द्वारा भारतीपुरम (तमिलनाडू) में जरुरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत तमिलनाडु प्रांत के भारतीपुरम नगर में 02 अगस्त 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 110 परिवारों को राशन– किट प्रदान किये गये। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं– मुख्य अतिथि श्रीमती मरगधाम जी (विधायक महोदय), अध्यक्ष श्रीमान् युवराज जी (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री वेंकेश जी (सोशल वर्कर) पधारे। शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

पटना में 48 जरुरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से 48 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किया गया। संस्थान पिछले 10 माह उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क भोजन व राशन वितरण की सेवाए दे रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इसी क्रम में रविवार को पटना में राशन वितरण का शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, दो किलो दाल, पांच किलो चावल, दो किलो रिफाइंड तेल, चार किलो चीनी व एक किलो नमक सहित मसाले दिये गए। स्थानीय आश्रम प्रभारी संदीप जी भटनागर ने बताया कि पटना में आचार्य विमल सागर दिगंबर जैन भवन में आयोजित शिविर में उपस्थित .ष्ण प्रसाद जी, राकेश जी गुप्ता, अर्चना जी जैन, ईशान जी जैन, विजय जी जैन, सुरेंद्र जी जैन, राहुल रंजन जी, विशाल सिंह जी, गोविंद केसरी जी, रोशन जी श्रीवास्तव, संजय कुमार जी, सोनू कुमार जी, मुकेश कुमार सिंह जी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

नारायण गरीब परिवार राशन योजना के तहत् रावलामण्डी में 32 परिवारों को निःशुल्क राशन वितरण

नर सेवा नारायण सेवा है यह मानते हुए असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर, एवम दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की शाखा रावलामण्डी द्वारा निःशुल्क राशन का वितरण किया गया। जिसमें पूरे भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क जा रहा है। रावलामण्डी के अंतर्गत 32 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। रावलामण्डी शाखा संयोजक श्री सुभाष जी प्रजापत ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि महेन्द्र जी तरड, श्री नन्द राम जी प्रजापत, श्री डुगर राम जी ने संस्थान गतिविधियों का अवलोकन किया।

संस्थापक चैयरमेन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान 36 वर्षों से दीन–दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोना किट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया। इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही हैं।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2 किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। शिविर प्रभारी मुकेश कुमार जी शर्मा ने बताया कि मनिष जी प्रजापत, श्री रूपेश जी प्रजापत, श्री करण जी प्रजापत आदि पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

नारायण गरीब परिवार राशन योजना तहत् बरेली में 60 जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से 60 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किये गये। संस्थान पिछले 10 माह उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क भोजन व राशन वितरण की सेवाएं दे रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इसी क्रम में रविवार को बरेली में 60 परिवारों हेतु राशन वितरण का शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, दो किलो दाल, पांच किलो चावल, दो किलो रिफाइंड तेल, चार किलो चीनी व एक किलो नमक सहित मसाले दिये गए।

स्थानीय आश्रम प्रभारी श्रीमान कुंवर पाल सिंह जी ने बताया कि बरेली शिविर में श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान विकास जी, डॉ. विनोद जी गोयल, श्री मान सतीश जी अग्रवाल एवं मुकेश कुमार सिंह जी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सम्पादकीय

पशुता व मनुष्यता का विभेद करने के लिए कई सारे मापदण्ड हैं, इनमें से एक यह भी है कि खुद ही खुद के लिए ही करे या औरों के लिये भी करे। एक प्राचीन कहावत है –'बाँट – चूँट ने खाणो, बैकुण्ठा में जाणो।' इसका आशय यही है कि हमें जो कुछ भी मिला है उसमें हमारे अकेले का पुरुषार्थ न भाग नहीं है। एक समग्र परिणति है कि हमें कुछ उपलब्ध हुआ है। जैसे किसी ने धन कमाया। उस कमाई में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगियों, ग्राहकों, घरवालों, अन्य सेवादारों का भी योगदान है। जब सभी के योगदान से धन या कोई अन्य चीज मिली है तो फिर मेरे अकेले का स्वामित्व कैसे होगा ? भागीदारी सबकी ही है। यदि उनकी सहभागिता को नजर अंदाज करके अपनी ही मिल्कियत स्थापित कर लूं तो क्या यह उन घटकों के प्रति धोखाधड़ी नहीं होगी ? निश्चित रूप से किसी के भी किसी भी प्रकार के निर्माण या उत्थान में कई चरणों में, कई लोगों का सहयोग होता है अतः सभी के प्रति अहोभाव तथा सभी को उस उपलब्धि का लाभ मिलना ही चाहिये। यही मानवीय गुण है कि वह श्रेय हो, वस्तु हो, शक्ति हो, जो भी हो उसे प्राप्त करने के बाद सभी में बाँटे भी।

कुछ काव्यमय

जाना है बैकुण्ठ तो,
खाओ मिलजुल बाँट।
मन विराट हो जायगा,
नहीं पड़ेगी गाँठ।।
आपस में बाँटी नहीं,
जो भी आई चीज।
सूख जायगा एक दिन,
प्रेम भाव का बीज।।
ज्यों बांटो त्यों त्यों बढे,
सामग्री या प्यार।
अनजाने बन जायगा,
एक नया संसार।।
बाँट–बाँट खाया नहीं,
तो क्या है उपयोग।
दिन–दिन बढ़ता जायगा,
कंजूसी का रोग।।
जो भी हमको मिल गया,
माने उसे प्रसाद।
सबको पहले बाँटकर,
खायें सबके बाद।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मन एक महासागर है

एक राजा था। बीमार हो गया। वैद्य बुलाए चिकित्सा कराई। ठीक नहीं हुआ। एक वैद्य आया। उसने निदान किया। निदान सही हुआ। दवा दी। राजा स्वस्थ हो गया, एक पथ्य था– आम नहीं खाना है। वैद्य ने कहा– राजन्! वर्तमान में ही नहीं भाविष्य में भी कभी आपकों आम नहीं खाना है। जिस दिन आम खा लिया, बीमारी फिर प्रकट हो जायेगी। यदि स्वस्थ रहना है।

बीमारी से बचना है तो आम से भी बचना होगा। निर्देश देकर वैद्य चला गया। राजा बहुत स्वस्थ था। एक दिन अपने मंत्रियों सहयोगियों और कर्मचारियों के साथ राजा उद्यान– यात्रा के लिए निकला। उद्यान में गया। आम का मौसम था। सारे वृक्ष आम से लंदे हुए थे। वे पके

हुए आम। अच्छा रंग और बहुत मीठी–मीठी सुगंध! राजा का मन ललचाया। एक मन बोला– आमों के नीचें जाऊ। दूसरा मन बोला– नहीं नहीं जाना चाहिए। एक ओर से आकर्षण आ रहा है। तो दूसरी ओर से कुछ निषेध आ रहा है। राजा हठ कर चला। थोडी देर में फिर मन ललचाया, सोचा कि आमों के नीचे जाऊं, आम कि छाया में जाकर बैठूं। मन हुआ। दूसरा मन बोला– नहीं जाना चाहिए। केवल राजा का मन नही ऐसा हुआ। हर आदमी का मन ऐसा होता है। एक मन कहता है– मुझे बहुत अच्छा रहना है। किसी से लड़ाई – झगडा नहीं करना है शांति का जीवन बिताना है। दूसरा मन कहता है– सामने वाला लडता है तो मुझे क्यों नहीं लड़ना चाहिए? सामने वाला वाला गाली देता है। तो मुझे गाली क्यों नहीं देनी चाहिए? क्या मैं मोम का बना हुआ हूँ? सामने वाला मेरे साथ छेड़छाड न करें तो मैं भी कुछ नहीं करूंगा और वह करता है तो मैं क्यों नहीं करूं? इस प्रकार के विरोधी विचार आदमी के मन में पैदा होते रहते हैं। मन एक महासागर है इसमें तैरना सीखे।

– कैलाश 'मानव'

सज्जनता का गुण

सज्जन व्यक्ति सदैव सकारात्मक गुणों से भरे होते हैं। वे हमेशा दूसरों का भला सोचते हैं। वे परहित हेतु कभी धन के लाभ–हानि की चिंता नहीं करते।

एक बार एक धनी व्यक्ति के पास एक निर्धन महिला पहुँची और उसने उसे यह कहते हुए पचास हजार रुपयों की याचना की कि उसका बेटा बहुत बीमार है और उसे बेटे के इलाज हेतु रुपयों की सख्त जरूरत है। सेठजी के मुनीम को महिला पर संदेह हुआ कि शायद महिला झूठ बोल रही है। मुनीम जी ने सेठजी से आग्रह किया कि पहले हम इस महिला की सच्चाई की जाँच करा लेते हैं, फिर रुपये देते हैं। सेठजी ने मुनीम जी की बात को अनदेखा कर दिया और मुनीम जी को रुपये देने हेतु आदेश दिया। मुनीम जी ने महिला को तिजोरी से निकाल कर पचास हजार रुपये दे दिए और महिला वहाँ से चली गई।

कुछ दिन पश्चात् मुनीम जी दौड़कर सेठजी के पास आए और बोले, "सेठजी, मैंने कहा था ना कि वह महिला झूठी है और यह बात आज सत्य साबित हो गई। पुलिस आज उस महिला को पचास हजार रुपयों सहित पकड़ कर थाने ले जा रही थी। बहुत खुशी की बात है कि हमें हमारे रुपये वापस मिल जाएँगे।"

मुनीम जी की बात सुनकर सेठजी बोले, "मुनीम जी मेरे लिए भी वाकई में खुशी की बात है कि उस महिला का बेटा स्वस्थ, निरोगी और अच्छा है। मुझे मेरे पैसों की चिंता नहीं है।"कहने का तात्पर्य यह है कि परोपकारी व्यक्ति सदैव सकारात्मक रहते हैं। वे नकारात्मक बातों को स्वीकार नहीं करते। ऐसे लोग धन के गुम हो जाने और मिल जाने पर क्रमशः दुःखी और सुखी नहीं होते।

वे हर परिस्थिति में सदैव तटस्थ रहते हैं। दूसरों का भला चाहने वाला व्यक्ति कभी भी अपने ही हित के बारे में नहीं सोचता।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश की अब और कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई, वह अपने आप को ही कोसने लगा कि घर से खुल्ले पैसे ही लाने थे, अब कोई चारा भी नहीं था। वह बस में बैठ गया और इन्तजार करने लगा कि कब उदयपुर आये और कब वह कन्डक्टर से बाकी के पैसे मांगे।

थोड़ी ही देर में बस रवाना हुई। कैलाश की निगाहें कन्डक्टर पर ही टिकी हुई थी। बस थोड़ी आगे बढ़ी कि कन्डक्टर, ड्राइवर के पास बोनट पर जाकर बैठ गया। उसने बीड़ी सुलगा ली और फकाफक कश लगाने लगा। दो तीन कश के बाद उसने बीड़ी ड्राइवर को थमा दी। अब एक ही बीड़ी–बारी बारी से दोनों पीने लगे। दोनों बातें कर रहे थे, ड्राइवर बीड़ी पीता तब एक हाथ से स्टियरिंग चलाता।

इसी दौरान अचानक बस अनियंत्रित हो गई, सभी सवारियां घबरा गई। कैलाश यह सब देख रहा था और मन ही मन क्रोधित हुए जा रहा था। जब शेष सवारियों का भी आक्रोश उसने देखा तो उसमें हिम्मत आ गई और वो खड़ा होकर बोल उठा कि गाड़ी चलाते वक्त कृपा करके बीड़ी मत पीजिये। कैलाश ने यह बात ड्राइवर को कही थी मगर कन्डक्टर ने उसे डांट दिया और अपशब्द कहने लगा। कैलाश को डर लगने लगा कि अब यह उसके बाकी पैसे लौटाने से इन्कार तो नहीं कर देगा। कन्डक्टर के जोर–जोर से बोलने से बाकी सवारियां भी चुप हो गई, किसी ने कैलाश का पक्ष नहीं लिया। कन्डक्टर उस बन्दूकधारी पोस्ट मास्टर की तरह जय श्री हनुमान बोलने का आदी था। गाली गलौज के बीच भी जय श्री हनुमान का नाम लेना नहीं भूलता था। कैलाश को क्या पता था कि इस कन्डक्टर की तरह ही भविष्य में बात–बात पर ओम नमः शिवाय बोलने वाले ऐसे ही किसी खूंखार व्यक्ति से उसका सामना होगा।

अंश - 85

गुनगुना पानी है बड़े काम का

गर्म पानी का एक स्वास्थ्य लाभ यह भी है कि इससे रक्त परिसंचरण बढ़ता है, जो मांसपेशियों व तंत्रिका गतिविधि के लिए महत्वपूर्ण है। वैसे तो आप अपने शरीर की जल संबधी आवश्यकताओं को सादा पानी पीकर भी पूरा कर सकते हैं, लेकिन अगर आप उसे हल्का गुनगुना करके पिएं तो इससे अनेक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं।

घटाए वजन – गर्म पानी में मेटाबॉलिज्म को स्वस्थ रखने की क्षमता होती है, जिससे आपके शरीर में वसा नहीं जमता और पहले से एकत्रित वसा भी टूटने लगता है। मेराबॉलिज्म को बेहतर बनाने के लिए दिन की शुरूआत एक गिलास गर्म पानी में नींबू के रस के साथ करें इससे वजन घटता है।

खुलतें है नाक –कान – अक्सर बदलते मौसम में लोगों को बंद नाक या गले में खराश की शिकायत रहती है। इस समस्या से छुटकारा पाने में गर्म पानी एक बेहतरीन उपाय है। गर्म पानी से सिर्फ कफ घुल जाता है, बल्कि बंद नाक भी खुल जाती है। ठीक इसी प्रकार यह गले की खराश में भी आरामदायक है।

सुधारे हाजमा – अगर पाचन संबंधी समस्या रहती है तो गर्म पानी लाभकारी है। कुछ अध्ययन बताते हैं कि खाने के दौरान या बाद में सादा या ठंडा पानी पीने से खाद्य पदार्थो के पाचन में परेशानी होती है। जिससे आंतों की भीतरी दीवारों में भोजन वसा के रूप में जमा हो जाता है जिसके कारण कभी कभी कैंसर होने का खतरा रहता है। ठंडे पानी की अपेक्षा गर्म पानी पीने से आप इस समस्या से बच सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

वो बोले– आपने पैछाणिया नी होकम। कूण आदमी आईग्यो? पीछाणे नी राम राम करियो। मैंने कहा– भाई में सिरोही में रहता हूँ और आप हमारे गाँवों से आये है। भीमाना, गोरिया से आप आये, आप से मिलने आ गया। कब भर्ती हुए? कैसे हुआ? क्या बात हुई? बैठो बैठो, परसों आयो होकम। काले आयो म्हारो पेट घणो दुःखे।

पेट घणो दुःखे महिना भरऊ वैद्यराजजी दवाई गणी दी और आछी– आछी दवाई दी दी। मने तो नाम याद नी, हरड़े, बहेड़े, त्रिफला रो चूरण हां। उना पाणीऊ लेता महाराज। म्हारे ठीक नी वीयो। अब एक्स– रे करायो है पन्द्रह रूपया एक्स– रे में लागी ग्या।

कई वेगा? म्हारे तो पया ही कम है। अच्छा सब ठीक वेई जायी, ठीक वेई जायी। हाँ, बासा आप केई रिया हो तो ठीक ही वेई जायी। पूरो विश्वास राखजो, मन ने मजबूत राखजो।

विश्वासम् फलदायकम् और
श्रद्धावान लभ्यते ज्ञानम्।

डॉक्टर साहब रे प्रति श्रद्धा राखजो। अरे! महाराज मोटा –मोटा शब्द मने समझ में नी आवे। श्रद्धा रो मतलब कई वे, विश्वास, भरोसो राखणो। हाँ, भरोसो राखजो। देवी–देवता रे प्रति राखजो।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 212 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023